अध्याय छठवाँ

उपसंहार

अध्याय छठवाँ

उपसंहार

डॉ.रघुवीर सिंह जी भावात्मक निबंध लिखनेवालों में से एक हैं । आपने गद्य-काव्य तथा गद्य-गीत साहित्य का सृजन किया । आपके साहित्य में `शेष स्मृतियाँ` गद्य-रचना सर्वोत्कृष्ट रही है । इसमें पाँच भावात्मक निबंध संग्रहीत हैं । इनमें एक ओर जनसामान्य के जीवन की सच्चाई तथा दूसरी ओर मुगलकालीन शासकों के जीवन के उतार चढ़ाव को चित्रित किया है । आपकी अनेक रचनाओं में भावात्मक निबंध संग्रहीत हैं । आपने भावात्मक निबंध में कल्पना का सहारा लेकर ऐतिहासिकता को भावानुकूल रंग से सजाया है । आपके `जीवन धूलि`, `सप्तद्वीप` तथा `बिखरे फूल` आदि रचनाओं में भावात्मक निबंध प्रकाशित हैं फिर भी साहित्य की पहचान `शेष स्मृतियाँ` में संग्रहीत भावात्मक निबंधों के माध्यम से ही होती है ।

`निबंध` आधुनिक विधा है । सभी विधाओं में निबंध का अंश दिखायी देता है । निबंध की व्याप्ति असीम है । इसलिए उसका स्वरूप तथा प्रकार निश्चित करना असंभव है । सही माने में निबंधकार अपने युग के अनुसार निबंध की रचना करता है । निबंध के नियमानुसार आकार, विषय और भाषा अनुकूल तथा मर्यादित होना आवश्यक है । भावात्मक निबंध में विषय कोई भी हो सकता है फिर भी इसमें संक्षिप्त वाक्य रचना, कसे हुए शब्द, रोचकता एवं प्रवाहात्मकता,

छोटे और सजीव वाक्य, चलती हुई भाषा, प्रसादात्मकता, नाटकीयता एवं कल्पनात्मकता आदि सब विशेषताएँ होनी चाहिये ।

निबंध तथा अन्य विधाओं में साम्य तथा भेद देखना आवश्यक प्रतीत होता है । प्रबंध, कथा, गीति, पत्र, तथा लेख आदि विधाओं में निबंध का अंश बिखरा हुआ दिखायी देता है । चाहे उपन्यास हो या कहानी । इन विधाओं में निबंध का भावात्मक वर्णन मिलता है । इन विधाओं में लेखक रसभोक्ता बनकर भावुकता को उँडेल देता है । किसी स्थान , युग और परम्परा के प्रति भावात्मक अनुभूतियाँ बरसा देता है । भावात्मकता के माध्यम से लेखक अपने व्यक्तित्व को उभरने की कोशिश करता है । जैसा इन में साम्य है ठीक उसी तरह उनमें भेद भी है -- निबंध में अन्य विधाओं की अपेक्षा सामाजिकता अधिक मिलती है । गीत की अपेक्षा निबन्ध में व्यक्तित्व अधिक सहज और प्रभावशाली रूप में आता है । निबंध किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है परंतु पत्र जैसी विधाओं की सीमाएँ संकुचित और विषय की दृष्टि से मर्यादित रहती है । उसी तरह निबंध और लेख इनमें भी अंतर है -- निबंध में अवकाश होता है परंतु `लेख` में समय की पाबंदी रहती है । लेख में सहजता और सुव्यवस्था नहीं होती । निबंध तथा अन्य विधाओं के लेखकों की मन:स्थिति में अंतर होता है । निबंध तथा अन्य विधाओं के साम्य तथा भेद जानने से यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व की सहज अनुभूति की अभिव्यक्ति और कलात्मकता निबन्ध को एक स्वतंत्र, सार्वभौम सत्ता प्रदान करती है । अन्य विधाओं में निबंध के अंश जरूर है परंतु उन्हें निबंध के अंतर्गत मानना उचित नहीं होगा ।

भावात्मक निबंध को किस विधा में रखा जाय इस पर विवाद है । कुछ विद्वानोंने इसे `गद्यकाव्य` के अंतर्गत रखा है परंतु भावात्मक निबंध को `गद्यकाव्य` या `गद्य गीत` की संज्ञा देना कहाँ तक उचित है । सवाल यह उपस्थित होता है कि क्या भावात्मक निबंध वास्तव में `गद्यकाव्य` कहलायेगी नही, भावात्मक निबंध को `गद्यकाव्य` संज्ञा देना तर्कसंगत प्रतीत होता है क्योंकि

उपन्यास कहानी निबंध स्केच तथा आत्मचरित सभी विधाओं में भावात्मक निबंध का अंश मिलता है। फिर प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यह गद्यखण्ड, गद्यकाव्य है तो वे सब क्या ? जिस निबंध में भावात्मकता तथा भावात्मक निबंध की जो विशेषतायें हैं। उस विशेषताओं से परिपूर्ण निबंध को 'गद्यकाव्य' या 'गद्यगीत' की संज्ञा न देकर उसे 'भावात्मक निबंध' ही कहना उचित लगता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर डॉ. रघुवीर सिंह की 'शेष स्मृतियाँ' में संकलित निबंध 'भावात्मक निबंध' है या 'गद्यकाव्य' है इसका विवेचन करेंगे।

डॉ. रघुवीर सिंह की 'शेष स्मृतियाँ' यह ऐतिहासिक गद्यकाव्य की पुस्तक है। परंतु उसमें संकलित निबंध भावात्मक है। रघुवीर जी ने इन पाँचों निबंधों का आधार ऐतिहासिक घटनायें तथा भवनों को लिया है। लेखक ने अपने लेखन कुशलता से इन पाँचों निबंधों में भावानुकूल वर्णन चित्रित किया है। 'ताजमहल', 'फतहपूर सिकरी', 'आगरा का किला', 'लाहौर की तीन कब्रें', 'दिल्ली का लाल किला' इनका लक्ष्य रहा है। इन निबंधों में आपने अकबर के समय से लेकर बहादूरशाह 'जफर' तक का अध्ययन किया है। मुगल साम्राज्य के वैभव को स्वप्न कहा है ? क्यों कि मुगल बादशाहों के वे वैभवपूर्ण खण्डहर आज अपनी करुणा कहानी को याद कर आँसू बहाते हैं। करुणा स्मृतियों के मस्ताने दिनों, उत्थान तथा पतन के चित्रों को लेकर रघुवीर जी ने भूतकाल की सरस झाँकि प्रस्तुत की है। आपने इतिहास की भाँति सम्राटों के तेज प्रताप और प्रभुत्व को सुचित करनेवाली घटनाओं को चित्रित नहीं किया है। आपने कल्पना द्वारा उनके विलास और ऐश्वर्य का चित्र खींचा है। लेखक ने एक विरोध उपस्थित करके अद्भूत चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। महाराज कुमार ने खंडहरों को और उनके पत्थरों को सजीवता प्रदान की है। जहाँ कहीं उनका हृदय भावावेग से पूर्ण हुआ है, पत्थरों को उन्होंने रुलाया है, या प्राचीन वैभव की याद में बावला बनाया है।

महाराज कुमार ने मुगल वैभव के इन खण्डहरों में घूमते हुये जीवन के उतार-चढ़ाव की आलोचना की है। जीवन की नश्वरता निरंतर बढ़ती हुई मानवीय इच्छायें, संघर्ष में पड़े मनुष्य की स्थिति, संसार से उपेक्षित व्यक्ति की करुणा का चित्र अंकित किया है। निबन्धों में एक ओर गम्भीरता तथा दूसरी ओर चिन्तन शान्ति को प्रकट किया है। लेखक के इन विचारों का अपना अलग सौन्दर्य और महत्व पाठक को अपने में लीन कर देता है। लेखक, वैभव विलास और उसके पतन के चित्र देने अथवा तज्जनित दार्शनिक उद्गारों के प्रकट करने में ही लीन नहीं रहे उन्होंने साम्राज्य वैभव लाखों करोड़ों गरीबों के रक्त मांस की नींव पर आधारित रहता है इस ओर भी दृष्टिपात किया है। सम्भावना और अनुमान के आधारपर भावुकतापूर्ण वर्णन करते समय विचित्र करुणा और विषाद की निर्मिति होती है। ऐसे समय वे अतीतकालिन राग-रंग और विलास-क्रीडा को मूर्तिमान कर देते हैं।

भाषा शैली की दृष्टि से 'शेष स्मृतियाँ' हिन्दी की बहुमूल्य कृति है। श्री माखनलाल चतुर्वेदी के 'साहित्य देवता' के बाद भावात्मक निबन्ध शैली के गद्य-काव्य की प्रौढ़ कृतियों में इसका ही नाम लिया जा सकता है। लम्बे-लम्बे भावात्मक और कल्पनात्मक निबंधों मे महाराज कुमार ने करुणा और विषाद को मूर्तिमान कर दिया है। पतन के उनके चित्र में शोक की सरिता प्रवाहित है। जब कि चतुर्वेदी जी में बलिदान और राष्ट्रीयता के कारण ओज है। रघुवीर सिंह जी का गद्य-फुलवारी के सहज प्रस्फुटित पुष्प गुच्छ जैसा है, जब कि चतुर्वेदी जी का गद्य वन्य प्रदेश के स्वाभाविक सौन्दर्य को आत्मसात करनेवाली उपत्यका की भाँति है। महाराजकुमार मे अलंकारों की चमक दमक अधिक है जब कि चतुर्वेदी जी में कथन की भंगिमा ऐसी है कि अलंकार इनके लिए अनावश्यक हो गये है। रूपक, मानवीकरण और उत्प्रेक्षा तीन अलंकारों का विशेष रूप से उपयोग किया है। अलंकारों से भी अधिक भाषा-शैली का आकर्षण उनकी वर्णन शैली है, जिसमें दर्द और करुणा का स्वर झंकृत है। वैभवपूर्ण भवनों तथा उनके शासकों के मानसिक

स्थिति का सजीव वर्णन अंकित करने में वर्णन शैली का चमत्कार स्थान-स्थान पर दिखायी देता है । यद्यपी उनकी भाषा शैली विक्षेप है तथापी लययुक्त प्रवाही भाषा की उनमें कमी नहीं है । भाषा में कथन के ढंग ने ही सौन्दर्य उत्पन्न कर दिया है । उनकी भाषा में अरबी, फारसी, संस्कृत आदि के शब्दों का ऐसा मेल है कि कहीं से उनकी भाषा शिथिल और गतिहीन नहीं जान पडती । एक-सा प्रवाह चला जाता है । पौराणिक संकेतों द्वारा भाषा में वे और भी चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं । तीन कब्रें, और ` उजडा स्वर्ग ` ... बहुत से अंश ऐसे भी हैं जहाँ मुगल बादशाहों के इतिवृत्त से अपरिचित व्यक्ति के पल्ले कुछ नहीं पडता।लेकिन इसमें लेखक का कोई दोष नहीं, उनका रस ग्रहण करने के लिए पाठक को इतिहास का ज्ञान होना आवश्यक है ।

` शेष ` स्मृतियाँ ` इस पुस्तक में संग्रहीत निबंधों में भावात्मकता ही अधिक दिखायी देती तथा भावात्मक निबंधों की विशेषताओं का परिपूर्ण संगम हुआ है । इसी कारण यह निबंध भावात्मक लगते हैं जैसे कि ` शेष स्मृतियाँ ` में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखित ` प्रवेशिका ` में कहा है कि ` महाराज कुमार निश्चिन्त रहे । उनके इन सुकुमार भावों को कठोर संसार की जरा भी ठेस न लगेगी । ये हृदय के मर्मस्थल से निकले हैं और सहृदयों के शिरीष - कोमल अन्तरतल में सीधे जाकर सुखपूर्वक आसन जमाएँगे । `

डॉ. रघुवीर सिंह जी के इस निबंध साहित्य में युग की रंगीनी का व्यापक प्रभाव तथा निबंधात्मकता आदि विशेषतायें रही हैं । लेखक ने अपनी भावात्मक रचनाओं में इतिहास के खण्डहरों में रस भरने का सफल प्रयास किया है । आपका साहित्य प्रसादात्मकता से परिपूर्ण है । आपने थोडेसे साहित्य में ` गागर में सागर ` भरने का सफल प्रयास किया है ।

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक
१	साहित्य भारती गद्य संग्रह	ओम.प्रकाश	एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि.,रामनगर,नई दिल्ली, ११० ०५५ ।
२	निबन्ध चयनिका	(डॉ.)अजय प्रकाश	साहित्य संस्था गांधीनगर,कानपुर ।
३	अभिनव गद्य भारती	(डॉ.)अरविन्दकुमार एस.	
४	हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्भव और विकास	(डॉ.)बलवन्त लक्ष्मण कोतमिरे	किताब महल, ५६ ए जीरो रोड इलाहाबाद १९५८ ।
५	निबन्ध निकष	(डॉ.)जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल	किताबघर हाईकोर्ट रोड, ग्वालियर-१
६	हिन्दी के प्रमुख निबंधकार रचना और शिल्प	(डॉ.)गणेश खरे	अभिलाषा प्रकाशन कानपुर
७	निबन्ध सप्तक	(डॉ.)राजनारायण मिश्र	एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि., रामनगर,नई दिल्ली,११००५५
८	आचार्य रामचन्द्र निबन्ध यात्रा	(डॉ.)कृष्णदेव झारी	इतिहास शोध संस्थान ३३ । १ ,भुलभुलैया रोड, महरौली नई दिल्ली
९	हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास	(डॉ.)प्रतापनारायण टंडन	
१०	हिन्दी गद्य काव्य का उभव काल १९२२-१९३०	(डॉ.) माधुरी छतो	

अ.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक
११	हिन्दी निबंधकार	जयनाथ `नलिन`	रामलालपुरी संचालक आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६
१२	प्रतिनिधि हिन्दी	(डॉ.)चिमुराम मिश्र	अभिनव भारती इलाहाबाद २११ ००३
१३	हिन्दी निबन्धों का शैलिगत अध्ययन	(डॉ.)मु.ब.शहा	पुस्तक संस्थान १०९ । ५० ए नेहरू नगर, कानपुर १२ ।
१४	हिन्दी गद्य काव्य	पद्मसिंह शर्मा `कमलेश`	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली- ६ ।
१५	हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
१६	गद्य मंजरी	(डॉ.)लक्ष्मीनारायण शर्मा	
१७	हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ	(डॉ.)लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	
१८	निबन्ध परिजात	संसारचन्द्र	एस.चन्द एण्ड कंपनी रामनगर,नई दिल्ली ।